DEEBALI

WALL MAGAZINE

2021 - 2022 (II)

संपादकीय

ठिठुरती सर्दी : अनकही बातें

दिसंबर की सर्दी और घना कोहरा दोनों के संबंध में प्रगाढ़ता है। ऐसी सिहरन कि गर्मी की तपिश कोसों दूर हो जाए। रात आखिरी पहर तक हाजिरी लगाती रहती है और वहीं सूरज गलियों में आने से कतराता है।

आग की उठती लपटें सुकून देती हैं तन-मन को। लिबासों की कई परतें लिपटी रहती हैं बदन पर। इसके बीच एक झरोखा है, जहाँ से दूर दिखता है कि एक अजीब सी तंगी की उलझन है- "क्या बिछाएँ क्या ओढ़ें"?

एक लालसा भरी नजर देखती है कि शायद आज बँटेगा कुछ और शांत होगी पेट की ज्वाला वह जो पुआल को बनाते हैं गलीचा, उन गलियों की सर्दी होती है बड़ी दुःखद क्योंकि धुंध में भी उनकी सुबह होती है उतनी ही जल्दी, बहुत सारे पेटों का बोझ भी वहन करना होता है।

शहर के बीचों-बीच कहीं जहाँ फर्श पर पाँव रखना भी एक जद्दोजहद है वहीं दूर कुछ फटी एड़ियाँ चला करती हैं कुदाल-फावड़े लेकर शाम तक क्योंकि उनके लिए ऊनी लिबास वो गर्माहट नहीं लाती, जो ले आती है, रात को चुल्हे से उतरी सोंधी खुशबू वाली रोटी।

शरद सौंदर्य है, श्रृंगार है। प्रेमियों के मन की उर्वर धरा पर लालसा के फसलों को उगने का अवसर प्रदान करती है। परंतु साथ ही कहीं पतझड़ है, वैराग्य है........ हताशा है किसी के दूर जाने की जिनको मिल न पायी बुनियादी जरूरत।

अंततः प्रतीक्षा है .... उन काँपते भावों को कि अब ले ले शीत करवट, कड़ी धूप से उतना नहीं तपता बदन जितनी कि टूट रही है ठंड से आशा।

सच में भावुक कर देती है :- सर्दी की ये अनकही बातें।

अगला संस्करण
रंग और मृदंग

ठिठुरती सर्दी

:अनकही बातें

THITHURATI SARDI

Name - SHILPI Kumari
Roll. No - 14(B)
Class - B.ed 2nd Sem
Session:- 2020-22 Date-

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

क्या लिखूं उन सर्दियों की अनकही बातें
वो घूमने वाली ठंडी रातें
वो रजाई के भीतर की गरमाहट
वो घने कोहरे के बीच फंसी किरणों की आहट
ऐसा लगता है किसी ने हमें घेरा है
चारों ओर घने कोहरे का डेरा है

रवि की किरणें धरा को छूने को बेकरार है
ईधर कोहरे भी हठ करने को तैयार है
वो धुँधली सी चंद्रमा बिखेर रही हैं चाँदनी
नदियों का ठंडा जल गा रही हैं रागिनी
जाड़े की वो सुनहरी धूप, मन को है भाती
शामें चुपके से नजर बचा के हैं जाती

सृष्टि प्रिया
क्रमांक - 31
बी.एड.
सत्र - 2020-2022

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें।

कभी चाय की चुस्की,
जब लगने लगी सुस्ती,
काम के बीच आराम की बात,
याद आ जाती हैं अक्सर, वो ठंडी रात,
कुछ गलत और कुछ सही झाखें,
ठिठुरती सर्दी अनकही बातें,

बाजार में हरी-हरी सब्जियों का मेला,
नही खाना तो, सस्ता मिलता था केला,
खेतो मे हरियाली, आने वाले पतझड़ का संकेत थी,
तभी सिर्फ अच्छाई नही, बुराई भी एक थी,
सब देखकर चलने से ही, बेहतर बनती है शाखे,
ठिठुरती सर्दी अनकही बातें,

वो सारे दिन स्वेटर के साथ,
वो सोते वक्त रजाई से मुलाकात,
वो कुहासे मे नजर आना, मुँह से भाप,
सही कह रहा हूँ न, ये बताएँ आप,
डॉक्टर भी चाहते थे, कि हम खांसे,
ठिठुरती सर्दी अनकही बातें,

Name- Puja Kumari
RHI-2
B.Ed
Session :- 2020-2022

"ठिठुरती सर्दी अनकही बातें"

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें
भीगी संध्या शबनमी रातें
ऐसे में दिल कैसे न तुझे पुकारे!
ऐ चांद तू कभी तो आ मेरे सिरहाने
सुन मेरी अनगिनत और अनंत बातें
ले चल मुझे भी अपने ठिकाने
सुना है वहां बड़ी शांति है
और शिष्टता भी बिना किसी भय के
मुझे भी सिखा दे समय पर काम करने
किसी पक्के वादे करके उसे निभाने
रिश्ते-नाते, अपने पराए सबसे
निस्वार्थ प्रेम करने
लुका-छिपी का खेल तेरा
वो नदी के किनारे मुझे बुलाने के बहाने
पर तमाम बाधाओं के बाद भी
मैं आ जाती हूँ प्रीत निभाने
सच में तू सबसे सच्चा साथी है रे!
ऐ चांद कभी तो आ मेरे सिरहाने.....

Name - Pragya Kumari
Class - B.ED
Roll no. - 95
Section - A
Session - 2020-2022

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

किट किट करके बजते दाँत,
सर्दी में जम जाते हाथ
ऊन स्वेटर भाये तन को
गरम चाय ललचाये मन को
सन सनी हवा खिजवाती है
झीनी-झीनी धुप बस याद आती है
दिल दुखाते रोजमी के काम
मन कहे रजाई में घुसकर करें आराम
पर घड़ी शोर मचाती है
सबको ठंडी में भगाती है
दिन चढ़े भी गहरा अंधेरा
चारों तरफ घना है कोहरा
लगता है बादल मिलने आते है
ठंडी का मतहार गाते जाते है
आखिर अब तो समय आ ही गया है,
जब हम सुबह उठकर जिंदगी का सबसे
बड़ा फैसला लिया करते हैं,
आज नहाऊँ या नहीं.......

Priyanka Kumari
Roll No - 16
D.El.Ed 2nd Year

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

तू कैसी है रे सर्दी, तेरी कैसी है खुदगर्जी
काँपने लगते हैं लोग सारे, जब हो जाए तेरी मर्जी
तू कैसी है रे सर्दी - - - - -

हरी सुकोमल दूबों पर ओस की बूँदें
इतराकर, इठलाकर सूरज को ही ढूँढे
ठंडी सनसनी हवाओं से क्यों है तुझे हमदर्दी
तू कैसी है रे सर्दी - - - - - -

गरीब तड़पते तेरे कारण, अमीरों को तू भाती
हरी साड़ी में सजा धरती को, पीली चादर ओढ़ाती
धरती के दर्शन हेतु, तुझसे सूरज भी करता अर्जी
तू कैसी है रे सर्दी - - - - - - -

उनका क्या जो वन में रहते, उनका क्या जो जल में रहते
सच कहूँ तेरी मार से महलों वाले लोग भी डरते
देखने में तू लगे मनोहर, पर है बड़ी मनमौजी
तू कैसी है रे सर्दी - - - - - -

ला देती हो मौसम में तू ऐसी कड़वाहट
बंद कर देती चिड़िया भी अपनी चहचहाहट
तेरे कारण हे सर्दी! कोयल भी नहीं गाती
तू कैसी है रे सर्दी - - - - -

नाम - प्रिया प्रतीक
कक्षा - बी॰ एड॰
रोल न॰ - 17

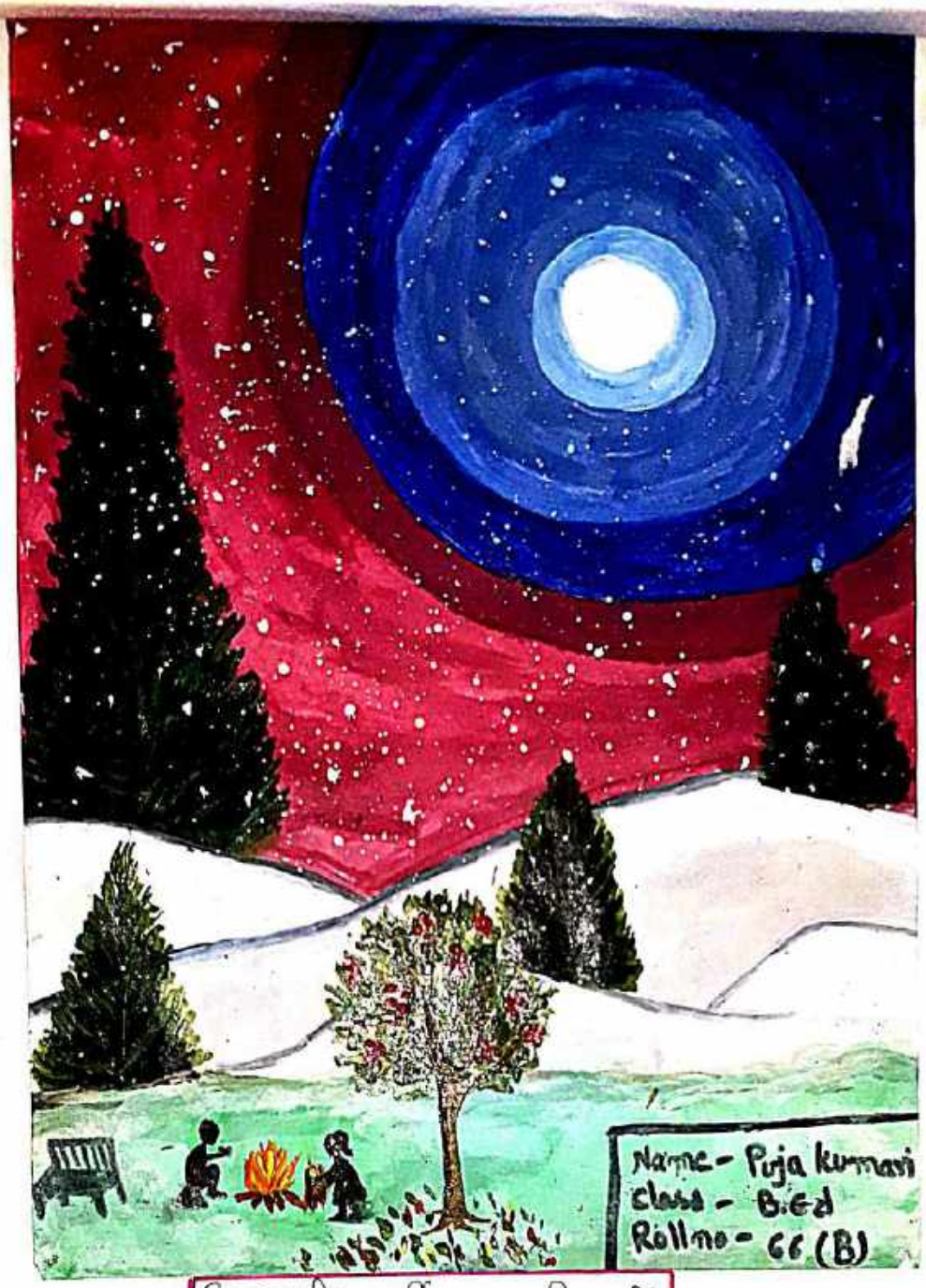

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

सर्दी का मौसम जब आए
सर्द हवाएँ संग ले लाए
सूरज भाया बदलों में छुपकर
दूर से अपना मुख दिखलाए

ठंड जैसे ही बढ़ती जाए
चाय, पकौड़े मन को भाए
दस्ताने, जैकेट और जर्सी
माँ हमको रोज पहनाए,

पहने जब हम गरम कपड़े
दिखने लगते मोटे - तगड़े
मूँगफली जेबों में भरकर

जनवरी के माह में फिर
सर्दियों की छुट्टी पड़ जाए
हम बच्चे खुशी-खुशी अपनी
नानी के घर मौज उड़ाए...

नाम - आभा कुमारी
रोल नं० - 87 (B)
वर्ग - B.Ed (2020-22)

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

बचपन में हमें ठंड लगती सुहानी थी
जब पूरे घर मे चलती हमारी मनमानी थी
स्कूल में पुरे 15 दिन की छुट्टी होती थी
वो भी दिन क्या मस्ती भरी होती थी

इन छुट्टीयो में हम खेला करते थे,
ठंड से तनिक भी नहीं डरते थे,
हमको ठंड नहीं लगेगी सबसे
हम यही कहते थे

ठंड में माँ ख्याल रखती थी,
ठंड लग जायेगी बाहर मत जाना
हमेशा यही कहती रहती थी
लेकिन अब ये जवानी बहुत सताती है
गर्मी हो ठंड रोज ऑफिस का रास्ता दिखाती है ॥

NAME - SUMAN KUMARI
CLASS - D. El. Ed FIST YEAR
ROLL No - 14

ठिठुरति सर्दी अनकही बातें

Name - Rozy Sweta Murmu, Roll No - 37 (B.Ed)
Section - A (2020-22)

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

सफेद चादर में लिपटी कोहरे की चुंच
ले आई ठंड की कैसी चुभन,
कोहराम करती वो सर्द हवाएं
छोड़ जाती बर्फ से ठंडी सिहरनें,
कोहरे का साया भी ऐसा गहराया
सूरज की लाली भी ना बच पाया,
अंधेरा घना जब चुंधलालाया
रात के सन्नाटों ने ओस बरसाया,
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहां देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी,
अमीरों के अफसानों के लाख इजार
गरीबी कम्बलों से निहारती दांत कटकटाती,
ठिठुरती कपकपाती सर्द रातों में
आग की दरस की प्यासी निगाहें,
याद आती है अंगूठी के इर्द-गिर्द
चाय की चुस्कियां लेती हो मजलिसें,
तन को बेचैन करती कोहरे ओढ़े
आती सुबह शुष्क हवाओं संग,
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहां देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी।

Sheetal Kumari
Roll No. 29 'A'
B.Ed
2020-2022

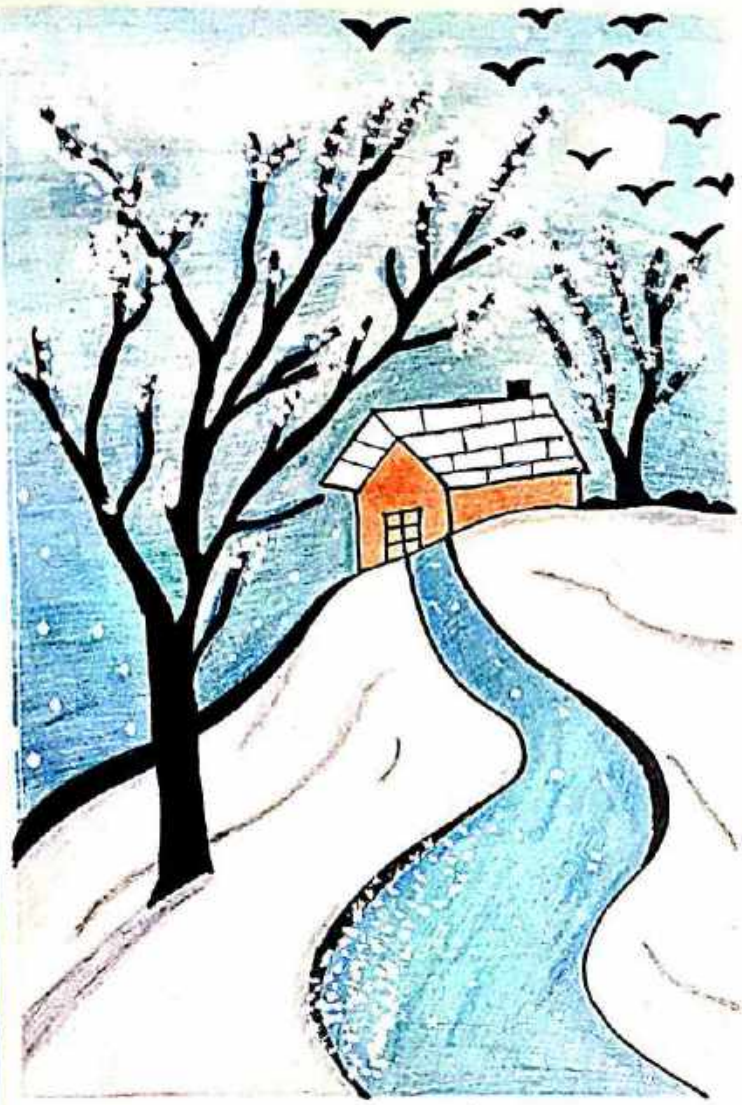

Name- SRISHTI ARYA
B.Ed (2020-2022)
Sec'A', Roll no-59

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

सर्दी का मौसम जब आए
सर्द हवाएँ संग में लाए
सबने लादे ढ़ेर से कपड़े
चाहे पुराने चाहे मोटे
नाक सबकी लाल हो गई
सुर्ख़ी सबकी चाल हो गई
ऊनी स्वेटर भाये सब को
गरम चाय ललचाये मन को
सनी-सनी हवा खीजती है
भीनी-भीनी धूप बस याद आती है
धीरे-धीरे जब रात हो जाती है
चारो ओर कोहरा छा जाती है
ठंड का मल्हार गाती जाती है।

NAME - CHANDANI KUMARI
Roll. no. - 11
D.El.Ed (1st year)

"ठिठुरती सर्दी अनकही बातें"

ऐसी एक है, ऋतु आई
सबको चादर है ओढ़ाई।

रातों को लंबी कर देती है,
जग मे कोहरा भर देती है।
पेड़ो के पत्ते झड़ जाते है,
सब प्राणी कांप जाते है।
ऐसी मौसम ने लाई अंगड़ाई,
सब पर ठंडक है बरसाई।
सूरज चाचू लगते प्यारे,
सब धूप ताप कर राहत पाते।

ऐसी एक है, ऋतु आई
सबको चादर है ओढ़ाई।

इस ऋतु कि है अनोखी बात,
सब जगह कर दे मौसम साफ।
सारे पत्तो में ओस की बूँदे,
मानो रब ने मोती बुने।
न ठंडाई, ना आईसक्रीम भाये,
गरम चाय पर दिल ललचाये
सुबह की ठंडक भरी शुरूआत,
गरम खाने से बनती बात।

ऐसी एक है, ऋतु आई
सबको चादर है ओढ़ाई।

नाम - पूजा कुमारी
वर्ग - B.Ed (Sem-II)
क्रमांक - 66 "B"

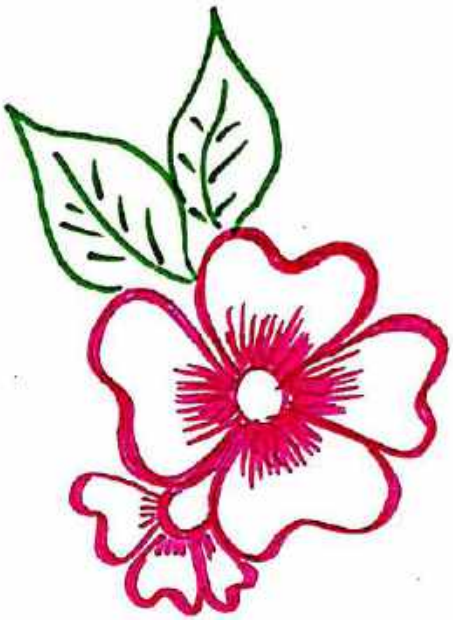

ठिठुरती ठंडी अनकही बातें

सफेद चादर में लिपटी कोहरे की धुंध
ले आई ठंड की कैसी चुभन,
कोहराम करती वो सर्द हवाएं
छोड़ जाती बर्फ से ठंडी सिहरनें,
कोहरे का साया भी ऐसा गहराया।
सूरज की लाली भी न बच पाया,
अंधेरा घना जब धुंधलाया
रात के सन्नाटों ने ओस बरसाया,
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहाँ देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी,
अमीरों के अफसानों के ठाठ हजार
गरीबी कम्बलों से निहारती रात कड़कड़ाती,
ठिठुरती कपकपाती सर्द रातों में
आग की तपस की प्यासी निगाहें,
याद आती है अंगीठी के इर्द-गिर्द
चाय की चुस्कियां लेती वो मजलिसें
तन को बेचैन करती कोहरे ओढ़े
आती सुबह शुष्क हवाओं संग,
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहाँ देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी।

Name :- khushboo kumari
Roll no- 43
D.El.Ed 2nd year (2020-2022)

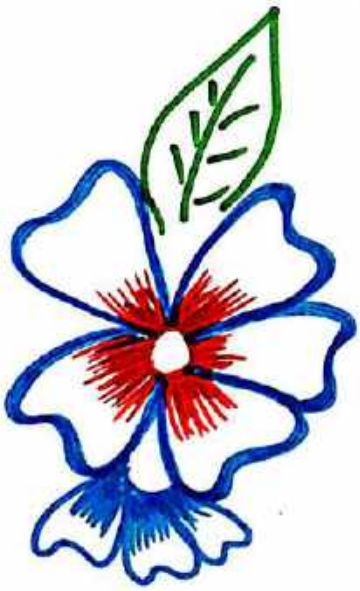

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

सूरज करने में लगा है, मनमानी ।
खेलने में लगा है, आँखमिचौली ॥

कि हो गया हर एक दिन प्यारा ।
आने वाली है सर्दियों का दिन प्यारा ॥

देखूँ तो जरा कौन दे रहा दस्तक दरवाजे पे ।
सज-धज कर कौन खड़ा है, मेरे द्वारे पे ॥

क्रियाओं के अंदाज भी कुछ बदले-बदले से हैं ।
क्या कहूँ मैं, आगोश में शीतल हवाएँ और शांति है ॥

हो चुका है मिलन, दो बेलाओं का,
प्रकृति दे रहा संदेश, प्रेम का ।

एक अजीब सी लहर अस्तित्व में है,
मन काँप जाए, ऐसी लगन इसमें है ।

कुछ कही तो कुछ अनकही बातें, मेरे साथ हैं,
थोड़े ही समय के लिए, पर सर्दियों का मौसम, मेरे साथ है ।

नाम - अनन्या कुमारी
रोल नं: - 10
डी० एल एड (द्वितीय वर्ष)

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

सफेद चादर में लिपटी कोहरे की धुंध
ले आई ठंड की कैसी चुभन,
कोहराम करती वो सर्द हवाएं
छोड़ जाती बर्फ से ठंडी सिहरनें,
कोहरे का साया भी ऐसा गहराया
सूरज की लाली भी ना बच पाया
अंधेरा कहर जब घुंधलाया
रात के सन्नाटों ने ओस बरसाया
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहां देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी,
अमीरों के अफसानों के ठाठ हजार,
गरीबी कम्बलों से निहारती दांत कटकटाती,
ठिठुरती कपकपाती सर्द रातों में
आग की दरस की प्यासी निगाहें
चाय की चुस्कियां लेती हो मंजिल से
तन को बेचैन करती कोहरे ओढ़े
आती सुबह शुष्क हवाओं संग
कैसे कहर ये ठंड की पड़ी
जहां देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी

SHEELA MARANDI
ROLL NO - 62
CLASS - B.ED
Section - 'B'

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

बचपन में हमें ठंड लगती सुहानी थी,
जब पुरे घर में चलती हमारी मनमानी थी,
स्कूल में पुरे 15 दिन की छुट्टी होती थी,
वो भी क्या दिन मस्ती भरी होती थी,

इन छुट्टियों में जी भर के खेलते थे,
ठंड से तनिक भी नहीं डरते थे,
हमको ठंड नहीं लगेगी सबसे
हम यही कहते थे,

ठंड मे माँ ख्याल करती थी,
ठंड लग जायेगी बाहर मत जाना,
हमेशा यही कहती रहती थी
लेकिन अब ये उम्र बहुत सताती है
शर्मा हो ठंड रोज ऑफिस का रास्ता दिखाती है,

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहले सर्दी आई
सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले, चाहे तगड़े,

नाक सभी की लाल हो गई
सिकुड़ी सबकी चाल हो गई,

Name-Rajni Kumari Singh
Class :- B.Ed
Roll - 44
Sec - 'B'

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

गयी है गर्मी सर्दी आयी
ठंडा-ठंडा मौसम लायी
सूरज की तपिश को ठंडा कर दे
ऐसी देखो धुंध है छायी,
गयी है गर्मी सर्दी आयी
ठंडा-ठंडा मौसम लायी।

ए.सी., कुलर हो गये बंद
रातों की गति भी हो गयी मंद,
पानी छूने से डर लगता है
ऐसी पड़ने लगी है ठण्ड,
कम्बल, चादर रख दिये हैं सब
निकाल ली है अब तो रजाई,
गयी है गर्मी सर्दी आयी
ठंडा-ठंडा मौसम लायी।

देर सुबह तक सोते हैं सब
जल्दी कोई न उठता है,
सर्द हवाएँ जो छू जाये
एक करंट-सा लगता है,
जम कर फिर खूब होती है
बदन पे कपड़ों की लदाई,
गयी है गर्मी सर्दी आयी
ठंडा-ठंडा मौसम लायी।

ALISA HEMBROM
Roll No - 32
D.El-Ed 2nd year

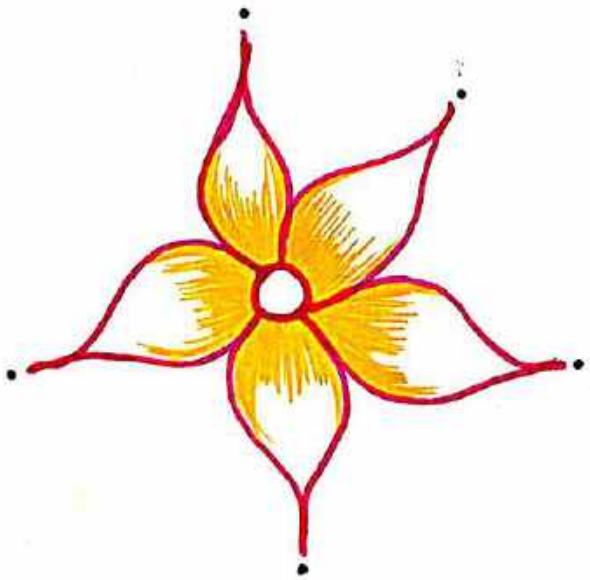

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

ठंडी ठंडी चली हवा
लगे बर्फ की डाली
चुभती है तीरों जैसी
कल की वो मखमली हवा,
बाहर मत आना भैया
लिए खड़ी दोनाली हवा,

दादी कहती मफलर लो
चल रही मुँह-जली हवा
स्वेटर, कम्बल, कोट मिले
नहीं किसी से टली हवा
गर्मी में सबको भाये
अब सर्दी मे खली हवा,

सर्दी लगी रंग जमाने
दाँत लगे किटकिटाने
नई-नई स्वेटरों को
लोग गए बाजार से लाने,

बच्चे लगे कंपकपाने
ठंडी से खुद को बचाने
ढूंढकर लकड़ी लाए
बैठे सब आग जलाने,

Name- Albina Hansdak
Class - D.El.Ed 2nd year
Roll no - 15

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

ये ठंडी-ठंडी हवाएँ
याद तेरी लाए
वो काँपती हुई हमारी हाथें
और इक दूजे की आँखों में आँखें

लालिमा लिए आता सूर्य
और चहचहाती चिड़ियों के नीचे
बिताया हुआ हमारा एक एक पल
आज भी हुआ ना कल

एक-दूजे को देख बस मुस्कुराते रहना
जुबां पे बातों का आकर अटक जाना
कभी आँखों को फेर, आसमा को ताकना
तो कभी चिड़ियों से कुछ गुफ्तगू करना

दिल मे अनकही बातों के लिए
एक दूजे को निहारना
जाते-जाते भी गर्दन घुमा कर
एक दूजे को निहारना
दिनों बाद आज सब याद आया है
ठंडी हवाओं ने मुझको मेरे
खोया एहसास दिलाया है

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

मौसम भी करवट बदल रहें
एक रंग नई सी छाई है।
सुने गगन चहचाहने लगे
और फूल भी इतराई हैं।

बादल भी उमड़ घुमड़ रहे हैं
कहीं हल्की सी अंगड़ाई है।
पानी भी पवन से खेल रहे हैं।
हर पेड़ को डाले लगाई हैं।

कहीं ठंड है कहीं नरम धूप,
कहीं गरम-गरम
चाय है कोई बादलों का मजा लेते
तो कोई
घर में ओढ़े रजाई।
छटा ऐसे ही छाए रहना, ये ठिठुरती
सर्दी अनकही बातें
सबके मन को भाई हैं।

नाम - दीपा कुमारी
वर्ग - D.El.d 1st year
रोल नं० - 27

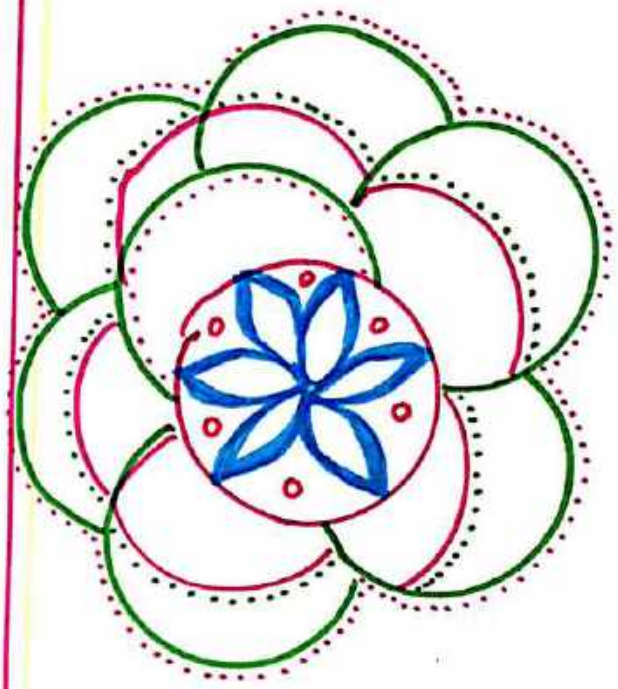

ठिठुरती सर्दी की अनकही बातें

सर्दी लगी रंग जमाने,
दाँत लगे किटकिटाने,
नई-नई स्वेटरों को
लोग गए बाजार से लाने।

बच्चे लगे कपकपाने,
ठंडी से खुद को बचाने,
ढूँढकर लकड़ी लाए,
बैठे सब आग जलाने।

दिन लगा अब जल्दी जाने,
रात लगी अब पैर फैलाने,
सुबह शाम को कोहरे छाए,
हाथ-पैर सब लगे ठंडाने।

Name- Shambhavi Bharti
Class- D.El.Ed (2021-31)
Roll no- 21

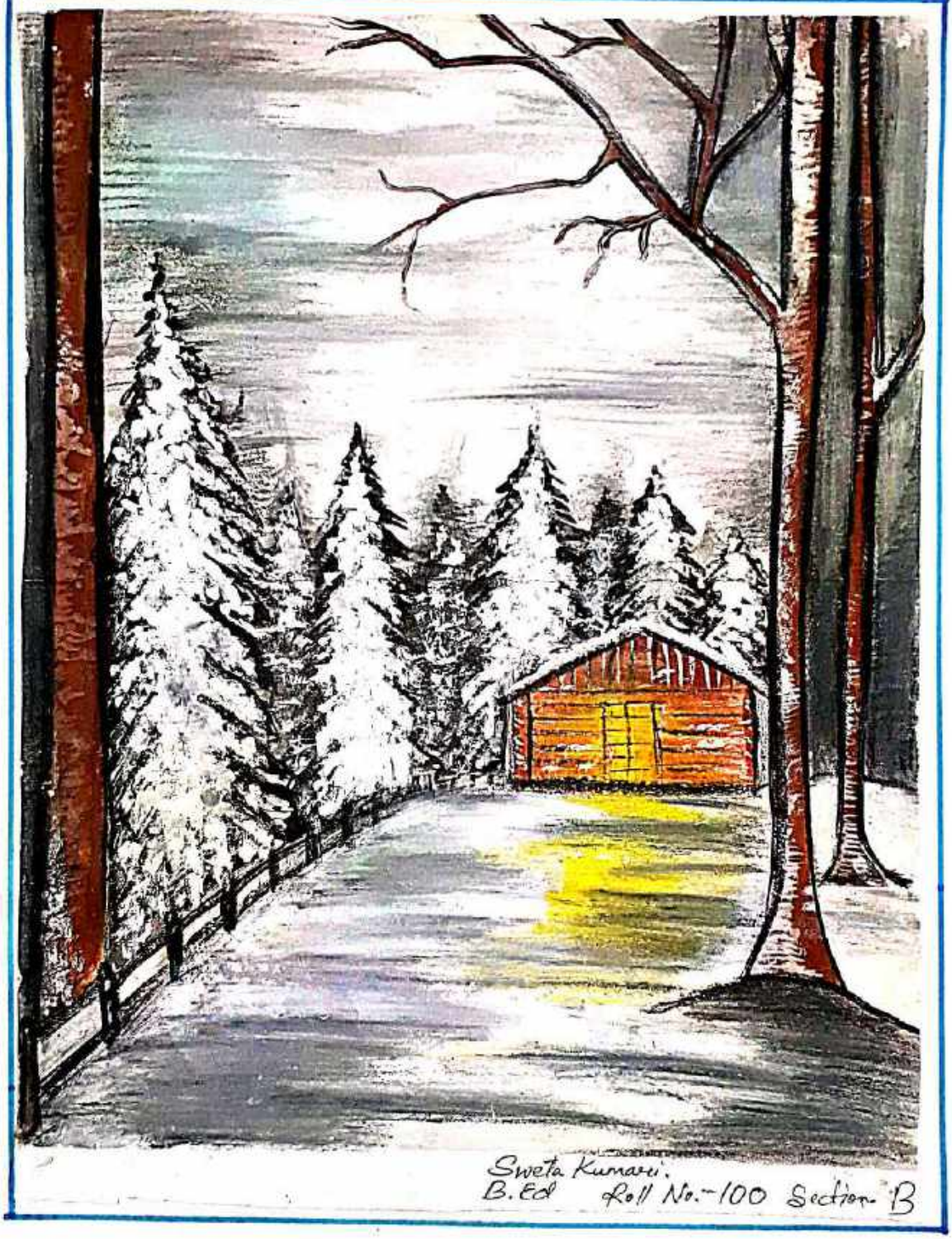

Sweta Kumari.
B.Ed Roll No.-100 Section-B

• ठिठुरती सर्दी अनकही बातें :

सर्दी आई सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई

सबने लादे ढेर सारे कपड़े
चाहे दुबले चाहे तगड़े

नाक सभी की लाल हो गई
सुस्कड़ी सब की चाल हो गई

ठिठुर रहे हैं काँप रहे है
दौड़ रहे है, हाँफ रहे है

धूप में दौड़े तो भी सर्दी
छाँओं मे बैठे तो भी सर्दी

बिस्तर के अंदर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी

बाहर सर्दी घर में सर्दी
पैर में सर्दी सर में सर्दी

इतनी सर्दी किसने कर दी
ठंडे की जम जाए अर्दी

सारें बदन में ठिठुरन भर दी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी

ठिठुरती सर्दी अनकही बातें

कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहाँ देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी
कोहरे का साया भी ऐसा गहराया
सूरज की लाली भी न बच पाया

अँधेरा बना जब धुंधलाया,
रात के सन्नाटों ने ओस बरसाया
ठिठुरती कपकपाती सर्द रातों में
आग की तपन की प्यासी निगाहें,

तन को बेचैन करती कोहरे ओढ़े
आती सुबह शुष्क हवाओं संग
कैसी कहर ये ठंड की पड़ी
जहाँ देखो दुबकी पड़ी है जिंदगी।

नाम – नेहा कुमारी
कक्षा – B.Ed
क्रमांक – 146 'B'